Drishtikon
(UGC Care Journal)

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

हिंदी साहित्य का उदारवादी दर्शनः **समावर्तन**

डॉ. सोनाली नरगून्दे
एसोसिएट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला,देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
डॉ. मनीष काले
अतिथि व्याख्याता, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला,देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

सारांश

आज के समय में जब साहित्यिक पत्रिका पढने वालों की संख्या में कमी आ रही है, समावर्तन उन चुनिंदा पत्रिकाओं में है, जो आज अपनी गुणवत्ता के कारण देश की प्रमुख साहित्यिक पत्रिका बनी हुयी है। देश की कई पत्रिकाएं जब अपने अस्तित्व के लिये लड़ाई लड़ रही है, समावर्तन आज भी नए कवियों को एक बड़ा प्लेटफॉर्म दे रही है। खास बात यह भी है कि यह एक घराने से निकलने वाली पत्रिका है, जो अपने आप में एक बड़ा कदम है। भट्टाचार्य घराना इसे आज भी अपने दम पर संचालित कर रहा है। समावर्तन, भारत की उन पत्रिकाओं के लिये एक आदर्श उदाहरण है जो किसी न किसी कारण से बंद होने की कगार पर पहुंच गयी है। समावर्तन वास्तव में पत्रिकाओं के लिये संजीवनी है, जिसकी रणनीति अन्य पत्रिकाओं के लिये जीवित रहने का आधार हो सकती है। प्रस्तुत शोध पत्र में समावर्तन के विकास से लेकर प्रबंधकीय नीतियों पर प्रकाश डाला गया है।

मूल शब्द– पत्रिका, प्रबंधन, प्रभाव, बदलाव, आदर्श, घराना, साहित्य।

प्रस्तावना

देश में प्रिंट मीडिया पर वेब और सोशल मीडिया का खतरा मंडरा रहा है। प्रिंट समाचार पत्रों की प्रसार संख्या में लगातार कमी आ रही है और वेब मीडिया अपने पैर पसार रहा है। सोशल मीडिया की दस्तक ने समाचार पत्रों को और भी कमजोर कर दिया है। ऐसे में समयावधि में निकलने वाली पत्रिकाओं को लेकर कई सवाल खड़े हो जाते है। भविष्य तो दूर की बात है, वर्तमान में खुद को स्थापित किये रहना ही एक बड़ी चुनौती है। किसी पत्रिका की पहचान बने रहना अपने आप में एक मिसाल है। ऐसे में मध्यप्रदेश के उज्जैन से निकलने वाली साहित्यिक पत्रिका 'समावर्तन' इसका अपवाद बनी हुयी है। साहित्य ही एक ऐसा माध्यम है, जिससे हिंदी संस्कृति को बचाया जा सकता है। इसी सोच के साथ उज्जैन से इस पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया गया, जो आज एक साहित्यि यज्ञ में बदल गया है। देश को इस पत्रिका ने कई कवि दिये। कवियों की रचनाओं की संयुक्त पुस्तिका भी यह निकालते है, जिसे युवा द्वादश नाम दिया गया है। यह अपने आप में अनूठा प्रयास है। इसकी शुरुआत समावर्तन ने की, अब जयपुर का बोधी प्रकाशन इस काम को आगे बढ़ा रहा है। साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देना इस पत्रिका का उद्देश्य है।

उज्जैन के श्री प्रभात कुमार भट्टाचार्य ने एक साहित्यिक पत्रिका के प्रकाशन का संकल्प लिया। भट्टाचार्यजी ने कुछ अपने सहयोगियों से चर्चा की तो सभी ने उन्हें इस दिशा में कदम बढ़ाने और पूरा सहयोग देने का वादा किया। सहयोगियों के साथ भट्टाचार्यजी के जुनून ने साहित्य की दिशा में एक पत्रिका का उदय किया, जिसे नाम मिला ''समावर्तन''। राजनीति, अर्थ जैसे कई विषय थे, लेकिन संस्थापक भट्टाचार्यजी की सोच ही इस दिशा में नहीं थी। मूलतहः श्री भट्टाचार्य रंगकर्मी थे और

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

उनका रुझान भी इसी विधा की तरफ था। वे तो केवल हिंदी साहित्य की सेवा करना चाहते थे। उनकी सोच थी कि हिंदी साहित्य की दिशा में कुछ ऐसा किया जाए जो मिल का पत्थर साबित हो। समावर्तन इसी सोच का ही परिणाम है। अप्रैल 2008 को इसका प्रकाशन शुरु हुआ।

शुरुआत में तो पत्रिका पूरी तरह से ब्लेक एंड व्हाइट थी, लेकिन इसे पाठकों का अच्छा फीडबैक मिला। कुछ ही महीनों में इसको प्रकाशित करने वालों का उत्साह दोगुना था। पाठक जिस तरह से प्रकाशकों को लिखकर उनके काम को सराहा रहे थे, उससे टीम का हौसला बढ़ा। चुंकि एक व्यक्ति की पूंजी लगी हुई थी, इसलिए आर्थिक तंगी तो थी ही। आर्थिक परेशानी को जैसे–तैसे हलकर पत्रिका का प्रकाशन जारी रखा गया। कई बार ऐसे मौके भी आए जब पत्रिका को अर्थ संकट के चलते बंद करने का विचार आया, लेकिन पत्रिका की पूरी टीम ने इसे संभाले रखा। पत्रिका का जिम्मा देखने वाले सभी पदाधिकारी अवैतनिक ही काम करते है। साहित्यिक पत्रिकाओं का स्वरुप बोझिल सा होता था, सो समावर्तन को रंगीन करने का निर्णय लिया गया। पूरी टीम कुछ अलग से करना चाह रही थी। ऐसा किया भी गया। बहुरंगीन पृष्ठों पर भी समार्वतन को प्रकाशित किया गया, लेकिन उससे उसकी लागत बढ़ी। ऐसे में पत्रिका की कीमत बढ़ाने के अलावा प्रकाशकों के पास कोई विकल्प नहीं था। पत्रिका की कीमत 150 रुपए प्रति माह कर दी गई, लेकिन पाठकों ने इसकी मूल्य वृद्धि को सराहा नहीं। पाठ संख्या कम होने लगी तो पत्रिका को फिर से ब्लेक एंड व्हाइट में ही निकाला जाने लगा, जिसकी कीमत को भी कमकर फिर से 60 रुपए प्रति माह कर दिया गया। यह पूरी तरह से साहित्य और संस्कृति आधारित पत्रिका है। साहित्य के उत्थान के लिए हर संभव प्रयास पत्रिका के माध्यम से किये जाते है। यह पूरी तरह से उदारवादी विचारधारा की पत्रिका है, जिसमें केवल साहित्य और संस्कृति से जुड़ी सामग्री ही प्रकाशित की जाती है।

– दरअसल पत्रकारिता के ही स्थापित मापदंड भूला दिए गए है, जिससे पाठकों का विश्वास ही पत्रिकाओं पर नहीं रहा। आज पत्रकारिता मिशन की बजाए बाजार हो गया है। पाठकों और लेखकों में दूरियां बढ़ी है, जो कहीं न कही पत्रिकाओं के भविष्य की दिशा को प्रभावित करती है। इन सबके बीच समावर्तन अपना वजूद बनाए हुए है, जो इसकी प्रबंधन सफलता को बताते है।

बदलाव और समीक्षा– वर्ग को लक्षित कर इसके लिये सामग्री का प्रकाशन किया जाता है। चुंकि सामग्री साहित्य से जुड़ी हुई थी, इसलिए इसको पाठकों ने पसंद भी किया। बाद में पाठकों की राय को सामग्री प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाती है। पाठकों की राय के कारण सामग्री में नयापन भी आता है। समावर्तन में प्रकाषित सामग्री की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिये समय–समय पर समीक्षा भी की जाती है। कई वरिष्ट साहित्यकारों ने भी इसकी समीक्षा की, जिसमें रामषंकर त्रिवेदी जैसे नामी साहित्यकार भी है। श्री त्रिवेदी ने कई बार 15–15 पेजों की समीक्षा भी की है, जो इसके प्रभाव को दर्षाता है। पाठकों की राय जानने के लिये इसमें पाठकनामा एक कॉलम है, जिस माध्यम से पाठकों से सम्पर्क साधा जाता है। साहित्य और संस्कृति में रुचि रखने वाले लोग इसका पाठक वर्ग है।

सामग्री– साहित्यकार और लेखक तो इसके पाठक है ही लेकिन साहित्य से लगाव रखने वाले आम लोग भी इसके पाठ है। समय–समय पर सामग्री में बदलाव किया जाता है। प्रबंधन की अपनी सोच और पाठकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए यह किया जाता है। जैसे पुस्तक समीक्षा, बच्चों के लिए कॉलम, कटाक्ष जैसी सामग्री बदलाव का ही परिणाम है। कहानियों के लिए जगह भी समय की मांग के अनुसार ही दी गई। सरोकार, रंगशीर्ष, अभिमुख, मेरा नमन, साक्षात्कार, रेखांकित, समकाल–•कथाकाल, काव्यराग, •कहानी, कविताएं, नाट्य भूमि, एकाग्र,आत्मकथ्य, वीक्षा, पुस्तकें, मिलीं,साहित्यि, हलचल, लघु कथाएं, चिट्टी–पत्री, अनंतिम इसके प्रसिद्ध स्तंभ है।

– पत्रिका में देश के महान साहित्यिकारों के विचारों और आदर्श कार्यों को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है, जो इसकी पहचान भी है। साहित्यकारों की साहित्य सेवा को आम लोगों तक पहुंचाना ही इसका उद्देश्य है। इस स्तंभ का नाम आत्मकथा है, जिसकी प्रस्तुति रोचक है।

''चुनौतियों और संघर्षों का दूसरा नाम ही जीवन है। जिसने भी बाधाओं से जूझना सीख लिया समझ लीजिये उसने जीवन जीना सीख लिया। बचपन से ही मेरे विचारों में समाज के लिये कार्य करने का दृष्टिकोण रहा है। भौतिक सुख सुविधाएं और चकाचौंध मेरे विचारों पर कभी हावी नहीं हो पाये। साधारण रहन–सहन को अपनाते हुए ऐसे कार्यों को कर जाना जो लोकहित, समाज हित और देश के लिये हो, ऐसा दृष्टिकोण मेरा हमेशा के लिये रहा है। यही कारण है कि मुझे महात्मा गांधी, आचार्य विनोबा भावे एवं लोकनायक जयप्रकाश नारायण के कार्यों, आदर्शों और सिद्धांतों ने बहुत प्रभावित किया और इन्हीं को आधार बनाकर मैंने अपने संपूर्ण जीवन को एक आकार

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

प्रदान किया। इस दृष्टिकोण पर कायम रहते हुए मैंन अपने जीवन में शिक्षा क्षेत्र, नारी सशक्तिकरण और समाज में सद्भावना कायम करने की दिशा में जो कार्य किया है उससे में बहुत हर्षित ओर संतुष्ट हूँ''

– कविताओं को इसमें प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है जो सहजता के साथ मुद्दों पर प्रहार करती है। कविताओं के माध्यम से हर विषय पर प्रकाश डाला जाता है।

'' आखिर कैसा देश है यह?

कि राजधानी का कवि

संसद की ओर पीठ किये बैठा है

सोती हुई अदालतों की आंख में

कोंच देना चाहता है अपनी कलम

गैरकानूनी घोषित होने से ठीक पहले

असामाजिक हुआ कवि

कविताओं को खंखार–सा

मुंह में छुपाए उतर जाता है''

– पुस्तक समीक्षा, वीक्षा जैसे स्तंभों में भी साहित्य की गरिमा को जीवित रखा जाता है, वही भाषा पर गहरी पकड़ देखने को मिलती है। पत्रिका की लेखनी में गहरापन है।'' संग्रह की कई रचनाओं की विषय वस्तु राजनीति है तो देश और उसका दृश्य पहल भी है। और नेता हैं तो उनके कच्चे–पक्के अंदाज भी। इन रचनाओं के माध्यम से पूरा सीनारियों तो दृश्यमान होता है पर पंगु कदमों का चरित्र भी शब्दावतार लेता है। शब्दों की फेंक और लौटन में कौशल दिखाता रचनाकार अपनी प्रयोगशीलता से नेताई के विविध चरित्रों को संजोती है। 'पतन का गौरव' भी एक प्रतिमान बन जाता है। रिकार्डों की मेरिट लिस्ट में। समसामयिक राजनीति की बीज शब्दावली बयानबाजों के मूर्ख करतब, यूज एंड थ्रो की कूटनीति, हारे हुए नेता के गम गलत करने का साहसिक रोमांच, इस्तीफे और नैतिकता के कांटे, समाजवाद के पूंजीवादी संस्करण, राजनैतिक विचारों की साहसिक करनी व्यंग्यकार ने रचनाओं में परोसा है।

एक घराने के सोच साहित्य को कैसे जिंदा रखती है, समावर्तन इसका एक सफल उदाहरण है। आर्थिक प्रबंधन का रोना रोने वाले कई बड़े समूह को पीछे छोड़ते हुए एक व्यक्ति विशेष पत्रिका के लिये अपनी पूंजी लगा रहा है और साहित्यकार ही अपने स्तर पर इसका संचालन करते है। भट्टाचार्य घराना ही इस पत्रिका के मूल में है। इसलिए आम पत्रिकाओं की तरह आर्थिक प्रबंधन की कोई व्यवस्था नहीं है। साथ ही सहयोगियों की अपनी प्रतिबद्धता है। संस्थापक श्री भट्टाचार्यजी ने कई बार आर्थिक संकट के कारण पत्रिका को बंद करने की बात कही, लेकिन उनके बेटों ने इसे चलाने का सकंल्प दोहराया और इसे जीवित रखा। आर्थिक संकट का ही परिणाम है कि शुरुआत में लेखकों को भुगतान किया जाता था, लेकिन बाद में यह बंद कर दिया गया। प्रबंधन के मन में तो था, लेकिन वे सफल नहीं हो सके। वैसे विशुद्ध साहित्यिक पत्रिकाओं की यही हालत है। प्रबंधन के पास न तो विज्ञापन है और न ही कोई ओर स्पॉसर, जिसके भरोसे लेखकों को पैसा दिया जाता। ऐसे में किसी एक घराने द्वारा पत्रिका का प्रकाशन लगातार किया जाना अपने आप में अनूठा प्रयोग है। यह शुद्धरुप से साहित्यिक पत्रिका है। किसी भी तरह का व्यवसायिकदृष्टिकोण प्रबंधन का नहीं है। विज्ञापन नहीं के बराबर ही होते है। व्यक्तिगत सम्पर्कों से यदि कोई विज्ञापन आ जाता है तो उसे प्रकाशित कर दिया जाता है। अपने स्तर पर कोई प्रयास नहीं किया जाता है। सरकारी विज्ञापन भी नहीं लिये जाते है। प्रबंधन का मानना है कि विज्ञापन के लिए कई ऐसे तथ्य जुटाने होते है जो सही नहीं होते है।

समावर्तन के प्रबंध संपादक श्री निरंजन श्रोत्रिय का मानना है कि पत्रिका के पाठकों का कम होना चिंता का विषय है ही। इसका सीधा सा कारण जो सामने नजर आता है वह है विकल्प का ज्यादा होना। पाठकों के सामने आज कई विकल्प है, जिस पर पाठक वर्ग तैयार कर लेता है। इलेक्ट्रानिक मिडिया की बात करें, इंटरनेट की या फिर सोशल मीडिया की। सभी ने पाठकों को नया कुछ दिया है। इसमें भी सोशल मीडिया ज्यादा हावी है। एक समय जो लेखक अपनी सामगी

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

प्रकाशित करने के लिए पत्रिकाओं का रूख करता था, आज वह सोशल मीडिया का सहारा ले रहा है। प्रिंट मीडिया में छपने का जो उत्साह एक समय था, वह आज खत्म हो गया है। केवल वे ही लेखक प्रिंट की और रूख कर रहे है, जिन्हें सोशल मीडिया पर अच्छा प्रतिसाद नहीं मिल रहा है। दूसरा कारण हिन्द पत्रकारिता का परिदृश्य ज्यादा उत्साहजनक नहीं है। उसमें उस तरह की गरिमा नजर नहीं आ रही है, जैसे एक समय पहले थी। साहित्यिक पत्रिका की बात करें तो मेरा इशारा साहित्यिक राजनीति की तरफ है, गुटबाजी की तरफ है। लेखकों के बीच इतने मतभेद हो गए है कि पाठक कही न कहीं खुद को ठगा सा महसूस कर रहा है। एक ही सामग्री की एक गुट तारीफ करता है तो विरोधी गुट उसे नकारा साबित कर देता है। गुटबाजी से उठकर पाठक आज भी अच्छी सामग्री पढ़ना चाहता है लेकिन लेखकों की राजनीति ने उसे भ्रमित कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि पाठक वर्ग इससे दूर होता चला गया। लेखकों को समझना होगा कि उन्हें किसी गुट विशेष ने नहीं, पुरस्कार ने नहीं, मानदेय ने नहीं बल्कि पाठकों ने जिंदा रखा है। प्रेमचंद जैसे लेखक आज सालों बाद भी पाठकों के कारण ही जिंदा है, कालजयी हो गए है। व्यावसायिक पत्रिकाओं की बात करें तो वे भी किसी न किसी राजनीतिक पार्टी की विचारधारा से प्रभावित नजर आती है। हर पत्रिका पर एक विचारधारा हावी है, जो उसकी नहीं है और न ही उसके पाठकों की है। ऐसे में जो पाठक पढ़ना चाहता है, वह उसे नहीं मिल रहा है। कई ऐसे मुद्दें है, जो पाठक पढ़ना चाहता है, वह उसे नहीं मिल रहा है। कई ऐसे मुद्दे है, जो समाज तक पहुचांए जाने चाहिए लेकिन वे पत्र–पत्रिकाओं से गायब है। इसलिए ही इसे गोदी मीडिया कहा जा रहा हे। प्रिंट मीडिया खुद भी इसका कारण है। हर पत्रिका आज ऑनलाइन उपलब्ध है, जिसके कारण पाठक उसे ऑनलाइन ही निःशुल्क नेट पर पढ़ लेता है। ऐसे में पाठक वर्ग का प्रिंट पत्रिका से दूर होना लाजमी है। पत्रिकाओं के सामने दो चुनौतियां प्रमुख है। पहली है आर्थिक चुनौती। इसके कारण कई पत्रिकाएं बेसमय ही बंद हो रही है। दूसरा बड़ा कारण पाठकों का है। कोई भी पत्रिका आज के समय में अपना पाठक वर्ग तैयार नहीं कर पा रही है। पाठक वर्ग सीमित है, लेकिन विस्तृत पाठक वर्ग चुनिंदा पत्रिकओं के पास ही है। एक समय में धर्मयुग, हिन्दुस्तान जैसी पत्रिकाओं का अपना विस्तृत पाठक वर्ग था, जो आज नजर नहीं आता है। समावर्तन इन सब चुनौतियों के लिये तैयार है और चुनौतियों का समाधान करते हुए ही साहित्यि की सेवा कर रही है।

साहित्य के सेवा करने के उद्देष्य से प्रांरभ की गई यह पत्रिका तमाम संकटों के बाद भी खुद को आज तक बनाए हुए है। खास बात यह है कि तमाम संकटों के बीच प्रबंधन ने अपने आदर्षों से कभी समझौता नहीं किया। जिस उद्देष्य को लेकर इसे प्रांरभ किया गया था, प्रबंधन आज भी उस पर न केवल कायम है बल्कि उस पर चलने के लिये कठिन परिश्रम कर रहा है। जिस तरह से यह पत्रिका संचालित हो रही है, उससे संकेत मिल रहे है कि यह अपने 100 साल पूरे करेगी।

डा. सोनाली नरगूंदे, वरिष्ट व्याख्याता, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विष्वविद्यालय, इंदौर

डा. मनीष काले, अतिथि व्याख्याता, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनषाला,देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी, इंदौर

————————

Copyright©authors